

श्री नानाजी देशमुख (मरणोपरांत)

श्री नानाजी देशमुख एक प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता थे जिन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामीण आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में कार्य किया।

2. उनका जन्म 11 अक्टूबर, 1916 को मराठवाड़ा के कदोली गाँव में हुआ और उनका नाम चंडिका प्रसाद रखा गया, परंतु हर कोई उन्हें प्यार से नाना कहा करता था। नाना शैशवकाल में ही अपने माता-पिता के प्यार और स्नेह से वंचित हो गए, लेकिन शुरुआत से ही वे बहुत प्रतिभाशाली थे। उनका ध्येय उच्च शिक्षा प्राप्त करना था, लेकिन नियति ने उनके लिए कुछ और ही लिख रखा था। 1939 में, वे बिरला कॉलेज में प्रवेश के लिए राजस्थान के पिलानी के लिए रवाना हुए और अगले ही वर्ष राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) के प्रचारक बन गए।

3. 15 अगस्त, 1940 को, नानाजी को संघ का कार्य शुरू करने के लिए गोरखपुर भेजा गया। उस समय उनकी जेब में मात्र 14 रुपये थे। प्रारंभ में, उन्हें एक के बाद एक विभिन्न स्थानों पर रहना पड़ा। अपने मिलनसार स्वभाव से वे महंत दिग्विजय नाथ, गीता प्रेस के संस्थापक भाईजी हनुमान प्रसाद पोद्दार, कांग्रेस नेता बाबा राघव दास आदि जैसे प्रतिष्ठित लोगों के संपर्क में आए। विपत्तियों पर विजय प्राप्त करने की अपनी असाधारण योग्यता के द्वारा वे संघ की शाखाओं का तेजी से विस्तार करने में सक्षम हुए।

4. स्वतंत्रता के बाद, जनसंघ की स्थापना के दौरान नानाजी ने एक संगठनकर्ता और एक राजनीतिज्ञ के रूप में अपनी उत्कृष्टता साबित की। जल्द ही, वे गैर-कांग्रेसी राजनीति का एक प्रमुख केंद्र बन गए और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एक सुयोग्य और अभिन्न साथी बन गए। 1968 में पंडितजी के असामयिक निधन के बाद, उन्होंने उनकी स्मृति में दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना की और उसके माध्यम से देश में एक वैचारिक संवाद की शुरुआत की। उन्होंने देश भर में जेपी आंदोलन के प्रति जनभावना जगाने में प्रमुख भूमिका निभाई और वे लोकनायक जय प्रकाश नारायण के घनिष्ठ और अंतरंग मित्र बन गए। आपातकाल में, जेल में बंद होने के दौरान उन्होंने जनता पार्टी की नींव रखी। 1977 में जनता पार्टी सत्ता में आई, हालांकि, उन्होंने केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल किए जाने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। एक वर्ष के भीतर, उन्होंने सक्रिय राजनीति छोड़ने की घोषणा कर दी।

5. वर्ष 1978 में, नानाजी ने सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए अपनी संपूर्ण ऊर्जा और अनुभव सार्वजनिक जीवन के प्रति समर्पित करने का निर्णय लिया। उन्होंने अपना समूचा जीवन एकात्म मानववाद के दर्शन को जमीनी स्तर पर मान्यता प्रदान करने में, लगाने का प्रण कर लिया। गोंडा, बीड और चित्रकूट इस संकल्प की जीती-जागती मिसालें हैं। ग्रामीण विकास का चित्रकूट मॉडल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक पुनर्निर्माण का एक सुप्रसिद्ध उदाहरण है, जो सहज, सतत और अनुकरणीय है। 1999 में राष्ट्र की अग्रणी सेवा के लिए उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। वे आधुनिक युग के ऋषि थे, जिन्होंने अपना जीवन राष्ट्र सेवा में समर्पित कर दिया।

6. श्री नानाजी देशमुख का 27 फरवरी, 2010 को निधन हो गया, और उनकी वसीयत के अनुसार, उनके शरीर को मेडिकल छात्रों को दान कर दिया गया।

Shri Nanaji Deshmukh (Posthumous)

Shri Nanaji Deshmukh was an eminent social activist, who worked in the fields of education, health and rural self-reliance.

2. Born on October 11, 1916 in the Kadoli village of Marathwada and named Chandika Prasad, he was fondly called Nana by everybody. Though deprived of love and affection of his parents while still an infant, Nana proved to be a genius even in his early days. He was aiming for higher studies but destiny had something else in store for him. In 1939, he left for Pilani in Rajasthan to join Birla College, but the next year, he became a Pracharak of the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS).

3. On August 15, 1940, with just Rs. 14 in his pocket, Nanaji was sent to Gorakhpur to start Sangh's work. Initially, he had to stay in various lodges one after the other. With his amicability, he could make contacts with eminent people there, the likes of Mahant Digvijay Nath, Bhaji Hanuman Prasad Poddar, founder of Gita Press, Congress leader Baba Raghav Das, etc. With his exceptional ability to excel in adversities, he was able to expand Sangh shakhas rapidly.

4. After independence, when the Jana Sangh was formed, Nanaji proved his mettle as an organizer and a politician par excellence. Soon, he became the focal point of non-Congress politics. He proved to be an able and inseparable companion of Pandit Deendayal Upadhyay. After Panditji's untimely death in 1968, he founded Deendayal Research Institute in his memory, through which he initiated an ideological discourse in the country. He was instrumental in mobilizing popular sentiment for the JP movement across the country and became the closest confidant of Loknayak Jai Prakash Narayan. During Emergency, when in jail, he laid the foundation of Janata Party that swept to power in 1977. However, he declined the offer to be a part of the Union Cabinet. In a year's time, he announced his decision to leave active politics.

5. In 1978, Nanaji decided to dedicate his energy and experience in public life for social reconstruction. He decided to spend rest of his life to validate the philosophy of Integral Humanism on ground. Gonda, Beed and Chitrakoot are the shining examples of this resolve. The Chitrakoot Model of rural development is an internationally acclaimed module of social reconstruction, that is measurable, replicable and sustainable. He was awarded Padma Vibhushan for his pioneering service to the nation in 1999. He was a modern day sage who dedicated his life in the service of the nation.

6. Shri Nanaji Deshmukh passed away on February 27, 2010, and as per his will, his body was bequeathed for medical students.

डॉ. भूपेन्द्र कुमार हज़ारिका (मरणोपरांत)

डॉ. भूपेन्द्र कुमार हज़ारिका असम के एक सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक, गीतकार, संगीतकार, गायक, कवि और फिल्म निर्माता थे।

2. 08 सितंबर, 1926 को असम राज्य के सादिया में जन्मे डॉ. हज़ारिका की शुरुआत बहुत साधारण परंतु सांस्कृतिक रूप से समृद्ध थी। छोटी उम्र में ही उन्होंने अपनी माँ से असम का धार्मिक बॉरगीत सीखा। उन्होंने प्रत्येक वर्ष होने वाले असम के लोकप्रिय बिहू उत्सव समारोहों में भी भाग लिया और उनमें प्रदर्शित असम और पूर्वोत्तर के स्थानीय लोगों की गहन विविधता, लोक सौंदर्य, आचार-व्यवहार, गीत, लय, नृत्य, कला तथा खानपान की जानकारी प्राप्त की और उससे बहुत प्रभावित हुए। असमिया संस्कृति के आधार, समन्वयपूर्ण शैलियों के अपूर्व मिश्रण को मूर्त रूप देते हुए, उन्होंने बाद में लोकप्रिय शहरी और अर्द्ध-शास्त्रीय भारतीय संगीत शैलियों को एक साथ जोड़ने में सफलता प्राप्त की।

3. सात साल की उम्र में उनकी प्रतिभा को पहचानते हुए, डॉ. हज़ारिका को असम की सांस्कृतिक विभूतियों और भारतीय संस्कृति के प्रवर्तकों, जैसे ज्योति प्रसाद अग्रवाल, बिष्णु प्रसाद राभा, और अन्य गुणी लेखकों, गायकों, कवियों, अभिनेताओं और कलाकारों का अनुभवी परामर्श प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने कॉटन कॉलेज गुवाहाटी और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से शास्त्रीय शिक्षा प्राप्त की। उन्हें न्यूयॉर्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट करने के लिए विदेश यात्रा का अवसर भी मिला। इससे वे वैश्विक दृष्टिकोण पैदा कर सके और भारत के नव स्वतंत्र, पंथनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य के आधुनिक और प्रतिबद्ध नागरिक के रूप में स्वयं को तैयार करने में कामयाब हुए।

4. स्वतंत्र भारत के प्रगतिशील नेताओं के प्रोत्साहन के बाद, डॉ. हज़ारिका ने भारतीयों को अभाव और आत्मत्याग से मुक्ति के बारे में जागरूक करने का प्रयास किया। यद्यपि उन्हें हिन्दी और अंग्रेजी का धाराप्रवाह ज्ञान था, फिर भी उन्होंने अपनी मातृभाषा असमिया में लिखा। उनकी विशद काव्यात्मक भावप्रवणता में मानव दशा और प्रकृति, इतिहास, राजनीति और अर्थशास्त्र के साथ-साथ गहरी रोमानियत और आध्यात्मिक उत्साह विद्यमान था। बाद में, वे असमिया संस्कृति के एक ऐसे प्रमुख व्यक्तित्व के रूप में उभरे, जिनसे प्रत्येक पीढ़ी को एक आवाज, पहचान और प्रेरणा मिलती रही। उनके 'विविधता के साथ एकता' के मूल संदेश और दृष्टिकोण में केवल स्वतंत्र भारत में कठिन संक्रमण के दौर से गुजरने वाले असम और उसके पड़ोसी सीमावर्ती राज्यों के कई जातीय समूह ही नहीं वरन सभी भारतीय शामिल थे। उनके गीतों और कृतियों से पता चलता है कि उनमें जनसाधारण और स्त्रियों की दशा के प्रति सहानुभूति थी साथ ही साथ शिक्षित और अभिजात वर्ग को प्रेरित करने की भावना भी मौजूद थी। उन्होंने शांति को बढ़ावा देने तथा संगठित और बहु-सांस्कृतिक भारत की महानता को उजागर करने के लिए लेख लिखे और व्यक्तिगत योगदान दिया। ऑडियो-विजुअल विधा में उनकी डॉक्टरेट, फिल्म माध्यम के प्रति उनके समर्पण को अभिव्यक्त करती है। भारत लौटने के बाद उन्होंने अपनी स्वयं की फीचर फिल्मों और वृत्तचित्रों का लेखन और निर्देशन का कार्य शुरू किया और जीवन पर्यंत अन्य फिल्मों के लिए संगीत और गीतों की रचना की।

5. 50 के दशक के अंत में, डॉ. हज़ारिका गुवाहाटी से कोलकाता चले आए ताकि फिल्म और संगीत उद्योग के प्रमुख स्टूडियो के करीब रह सकें। बंगाली में गीत लिखकर और गाकर, वे बंगाली भाषी समाज के घर-घर में प्रसिद्ध हो गए, इसमें पड़ोसी बांग्लादेश भी शामिल था जिसने उनके बांग्लादेश की स्वतंत्रता के कठोर संघर्ष के दौरान राष्ट्रगीत रूपी और आह्वान बनने वाले गीतों के सम्मान स्वरूप 2012 में उन्हें 'फ्रेंड्स ऑफ लिबरेशन वार' से सम्मानित किया। उनके गीतों और गायकी ने प्रत्येक वर्ग के श्रोताओं के दिलों को छू लिया। 'ब्रह्मपुत्र के बार्ड (कवि)' के रूप में विख्यात डॉ. हज़ारिका अपने प्रशंसकों के लिए प्रेरणा के बड़े स्रोत बने हुए हैं।

6. डॉ. हज़ारिका को 9वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार (1961) में उनके द्वारा निर्देशित शकुंतला के लिए सर्वश्रेष्ठ असमिया फीचर फिल्म; 23 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार (1975) में चमेली मेमसाब के लिए सर्वोत्तम संगीत निर्देशक का राष्ट्रीय पुरस्कार; पद्मश्री (1977); 'सिनेमा और संगीत के माध्यम से जनजातीय कल्याण तथा आदिवासी संस्कृति के उत्थान में उत्कृष्ट योगदान के लिए अरुणाचल प्रदेश राज्य सरकार से स्वर्ण पदक (1979); संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (1987); दादासाहेब फाल्के पुरस्कार (1992); फिल्म रुदाली के लिए सर्वोत्तम संगीत पुरस्कार (1993), पद्म भूषण (2001); संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप (2008); असम राज्य के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार असोम रत्न (2009); 2012 में पद्म विभूषण आदि विभिन्न सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

7. डॉ. भूपेन्द्र कुमार हज़ारिका का निधन 05 नवंबर, 2011 को हुआ।

Dr. Bhupendra Kumar Hazarika (Posthumous)

Dr. Bhupendra Kumar Hazarika was a renowned singer, lyricist, musician, poet and filmmaker from Assam.

2. Born on September 08, 1926, in Sadiya, in the State of Assam, Dr. Hazarika's beginnings were humble but culturally rich. At a tender age, he learned Assam's devotional 'Borgeet' from his mother. He was also exposed to and touched by the intense diversity of indigenous people of Assam and the Northeast with their rich traditions of folk aesthetics, manners, songs, rhythms, dances, art and food displayed proudly every year during Assam's popular Bihu festival gatherings. Embodying the unique *mélange* of syncretic styles, the basis of Assamese culture, he was able to later fuse them with popular urban and semi-classical Indian musical idioms without failing to credit his sources, in words and deeds.

3. Found to be gifted by age seven, Dr. Hazarika was mentored by Assam's cultural giants and proponents of Indian culture, such as Jyoti Prasad Agarwala, Bishnu Prasad Rabha and other talented writers, singers, poets, thespians and artists. He acquired a grounding in classical education from Cotton College, Guwahati and Banaras Hindu University. He also got an opportunity to travel abroad for his Doctorate at Columbia University in New York that enabled him to cultivate a global perspective and an eye to model himself into a modern and engaged citizen of the newly independent, secular and democratic republic of India.

4. Following the exhortations of independent India's progressive leaders, Dr. Hazarika strove to achieve his true aim to educate Indians about the requisites to liberation from want and denial. Although fluent in Hindi and English, he wrote in Assamese, his mother tongue as his poetic soul ranged far and wide, from the human condition and its dependence on nature, history, politics and economics to eloquence of romance as well as spiritual rapture. Later on, he emerged as a central unifying figure in Assamese culture giving voice, identity and inspiration across the generations. His central message and vision of 'unity in diversity' included not only the numerous ethnic groups within Assam and her neighboring border States undergoing difficult transitions in post independent India, but all Indians. As his songs and actions reveal, he was pre-disposed to empathize with the common man and woman's plight while managing to inspire the educated and elite at the same time. He also wrote articles and made personal contributions to promote peace and to extoll the greatness of a united and multi-cultural India. His doctoral discipline in audio-visual education complimented his love for the film medium. Upon his return to India, he began to write and direct his own feature films and documentaries and later composed music and songs for others' movies, throughout his life.

5. In the late 50's, Dr. Hazarika moved to Kolkata from Guwahati to be close to the major film and music industry studios. By writing and singing songs in Bengali, he emerged to become a household name in the Bengali speaking world including in neighbouring Bangladesh, which honoured him in 2012 with its 'Friends of Liberation War' honour in recognition of his songs that became anthemic and a rallying cry during their bitter struggle for independence. His songs and vocalizations had touched his audience deeply across every divide. Dr. Hazarika, adoringly known as the 'Bard of the Brahmaputra', remains a tremendous source of inspiration for fans of his work.

6. Dr. Hazarika has received various honours and awards including for the best feature film in Assamese 'Shakuntala' directed by him in the 9th National Film Awards (1961); National Award for best Music Director for film 'Chameli Memsaab' at the 23rd National Film Awards (1975); Padma Shri (1977); Gold Medal from the State Government of Arunachal Pradesh for his 'outstanding contribution towards tribal welfare and upliftment of tribal culture through cinema and music' (1979); Sangeet Natak Akademi Award (1987); Dadasaheb Phalke Award (1992); Best Music Award for the film 'Rudali' (1993); Padma Bhushan (2001); Sangeet Natak Akademi Fellowship (2008); Asom Ratna, the highest civilian award in the State of Assam (2009); Padma Vibhushan in 2012 and many others.

7. Dr. Bhupendra Kumar Hazarika passed away on November 05, 2011.

श्री प्रणब मुखर्जी

श्री प्रणब मुखर्जी एक उत्कृष्ट राजनेता हैं, जिन्होंने पांच दशक से अधिक समय के अपने लंबे राजनीतिक जीवन में विभिन्न पदों पर रहकर राष्ट्र की सेवा की और देश के सर्वोच्च पद, भारत गणराज्य के राष्ट्रपति पर उनका निर्वाचन, इसकी पराकाष्ठा थी। उन्होंने भारत गणराज्य के 13वें राष्ट्रपति के रूप में 25 जुलाई, 2012 से 24 जुलाई, 2017 तक कार्य किया।

2. साधारण पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले श्री मुखर्जी का जन्म 11 दिसंबर, 1935 को स्वतंत्रता सेनानियों, श्री कामदा किंकर मुखर्जी और श्रीमती राजलक्ष्मी के सुपुत्र के रूप में पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले के छोटे से गांव मिराती में हुआ था।

3. श्री मुखर्जी ने इतिहास और राजनीति विज्ञान में दो मास्टर डिग्री के साथ-साथ कोलकाता विश्वविद्यालय से कानून में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। उसके बाद उन्होंने कॉलेज के शिक्षक और पत्रकार के रूप में अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत की। राष्ट्रीय आंदोलन में अपने पिता के योगदान से प्रेरित होकर, श्री मुखर्जी भारतीय संसद के उच्च सदन (राज्य सभा) के लिए चुने जाने के बाद 1969 में पूर्णकालिक सार्वजनिक जीवन के प्रति समर्पित हो गए।

4. श्री मुखर्जी देश के विदेश, रक्षा, वाणिज्य और वित्त मंत्री के रूप में अलग-अलग समय पर सेवा करने की शानदार उपलब्धि के साथ शासन में अद्वितीय अनुभव रखने वाले व्यक्ति हैं। वे 1969 से पांच बार संसद के उच्च सदन (राज्य सभा) के लिए और 2004 और 2009 में दो बार संसद के निचले सदन (लोक सभा) के लिए निर्वाचित हुए और उसके बाद वे 2012 में राष्ट्रपति बने। वे पार्टी की शीर्षस्थ नीति निर्माण समिति कांग्रेस कार्यकारिणी के 23 वर्षों तक सदस्य रहे।

5. श्री मुखर्जी ने, स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के अनुभवी सान्निध्य में रहकर राजनीतिक जीवन में तेजी से प्रगति की। उन्हें फरवरी, 1973 से अक्टूबर, 1974 तक औद्योगिक विकास, पोत परिवहन और परिवहन उप मंत्री बनाया गया और उसके बाद 1974-75 के दौरान वित्त राज्य मंत्री तथा 1975-1977 के दौरान राजस्व और बैंकिंग राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बनाया गया, तत्पश्चात, उन्होंने 1980-1982 के दौरान मंत्रिमंडल में वाणिज्य तथा इस्पात और खान मंत्री के रूप में कार्य किया। उन्होंने 1982 में पहली बार भारत के वित्त मंत्री के रूप में पदभार संभाला और 1980 से 1985 के दौरान संसद के उच्च सदन (राज्य सभा) के नेता रहे। बाद में, उन्होंने 1991 से 1996 तक योजना आयोग के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया और साथ ही 1993 से 1995 तक वाणिज्य मंत्री, 1995 से 1996 तक विदेश मंत्री रहे। उन्होंने 2004 से 2006 तक रक्षा मंत्री और 2006 से 2009 तक एक बार पुनः विदेश मंत्री के रूप में कार्य किया। वे 2009 से 2012 तक दोबारा वित्त मंत्री तथा 2004 से 2012 तक, जब उन्होंने राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ने के लिए इस्तीफा दिया, संसद के निचले सदन (लोक सभा) के नेता बने रहे।

6. श्री मुखर्जी ने 2004-2012 की अवधि के दौरान, 95 से अधिक मंत्री समूह/अधिकार प्राप्त मंत्री समूह (जीओएम/ईजीओएम) के अध्यक्ष के रूप में प्रशासनिक सुधार, सूचना का अधिकार, रोजगार का अधिकार, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार, यूआईडीएआई, आधार आदि की स्थापना जैसे कई मुद्दों पर सरकार के महत्वपूर्ण निर्णयों में अग्रणी भूमिका निभाई। सत्तर और अस्सी के दशक में उन्होंने क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (1975) और भारत के आयात-निर्यात बैंक के साथ-साथ नाबार्ड-राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (1981-82) की स्थापना में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने ग्रामीण इलाकों और विदेशों, खास तौर से खाड़ी क्षेत्र में राष्ट्रीयकृत बैंकों की शाखाओं के बड़ी संख्या में विस्तार के लिए अथक कार्य किया, इससे कानूनी रूप से भेजे जाने वाले धन की मात्रा में काफी वृद्धि हुई। श्री मुखर्जी ने पंचवर्षीय योजनाओं के लिए 1991 में केन्द्र और राज्यों के बीच संसाधनों के बंटवारे के लिए एक संशोधित फार्मूला भी तैयार किया जिसे गाडगिल-मुखर्जी फार्मूला के नाम से जाना गया।

7. श्री मुखर्जी के पास व्यापक राजनयिक अनुभव है और उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक और अफ्रीकी विकास बैंक के गवर्नरों के बोर्ड में कार्य किया है। उन्होंने 1982, 1983 और 1984 में राष्ट्रमंडल वित्त मंत्रियों के सम्मेलनों, 1994, 1995, 2005, 2006, 2007 और 2008 में संयुक्त राष्ट्र महासभा, 1995 में ऑकलैंड में राष्ट्रमंडल सरकार प्रमुखों की शिखर बैठक, 1995 में कार्टाजेना में गुटनिरपेक्ष विदेश मंत्री सम्मेलन और 1995 में बांडुंग में अफ्रीकी एशियाई सम्मेलन की 40वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित सम्मेलन में भारतीय शिष्टमंडलों का नेतृत्व किया है।

8. एक प्रखर वक्ता और विद्वान श्री मुखर्जी की बौद्धिक क्षमता और राजनीतिक कौशल के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय संबंधों, वित्तीय मामलों और संसदीय प्रक्रिया के उत्कृष्ट ज्ञान की अत्यंत सराहना की जाती है। भारत के जीवंत बहुदलीय लोकतंत्र के प्रमुख अंग विविध राजनीतिक दलों के बीच सर्वसम्मति बनाने की योग्यता के कारण जटिल राष्ट्रीय मुद्दों पर आम सहमति बनाने में उनकी भूमिका प्रशंसनीय रही है।

Shri Pranab Mukherjee

Shri Pranab Mukherjee is an outstanding statesman, who served the Nation in different capacities in his long political career spanning over five decades culminating in his election to the highest office of the country, i.e. the President of the Republic of India. He served as the 13th President of the Republic of India from 25th July, 2012 to 24th July, 2017.

2. A man of humble origin, Shri Mukherjee was born in the small village of Mirati in Birbhum District of West Bengal as son of freedom fighters, Shri Kamada Kinkar Mukherjee and Smt. Rajlakshmi on December 11, 1935.

3. Shri Mukherjee acquired two Master's degree in History and Political Science as well as a Bachelor degree in Law from the University of Kolkata. He then embarked on his professional life as a college teacher and journalist. Inspired by his father's contribution to the national movement, Shri Mukherjee plunged into full time public life in 1969 following his election to the Upper House of Indian Parliament (Rajya Sabha).

4. Shri Mukherjee is a man of unparalleled experience in governance with the rare distinction of having served at different times as Foreign, Defence, Commerce and Finance Minister of the country. He was elected to the Upper House of the Parliament (Rajya Sabha) five times from 1969 and twice to the Lower House of the Parliament (Lok Sabha) from 2004 and 2009 till 2012 when he became the President. He was a member of the Congress Working Committee, the highest policy making body of the Party for a period of 23 years.

5. Under the careful mentoring of late Prime Minister Smt. Indira Gandhi, Shri Mukherjee's rise on the political trajectory was rapid. He was made Deputy Minister of Industrial Development, Shipping and Transport from February, 1973 to October 1974, then Minister of State for Finance during 1974-75 and Minister of State (Independent Charge) for Revenue & Banking during 1975-1977, thereafter serving as the Cabinet Minister of Commerce and Steel and Mines from 1980-1982. He assumed office as the Finance Minister of India for the first time in 1982 and was Leader of the House in the Upper House of Parliament (Rajya Sabha) from 1980 to 1985. Later, he served as Deputy Chairman of the Planning Commission from 1991 to 1996 and concurrently as Minister for Commerce from 1993 to 1995 and Minister of External Affairs from 1995 to 1996. He served as the Minister of Defence from 2004 to 2006 and once again Minister of External Affairs from 2006 to 2009. He was the Minister of Finance for the second time from 2009 to 2012 and Leader of the Lower House of Parliament (Lok Sabha) from 2004 to 2012, till he resigned to contest election for the office of the President.

6. During the period 2004-2012, Shri Mukherjee, as Chairman of over 95 Group of Ministers/Empowered Group of Ministers (GOMs/EGOMs) was instrumental in spearheading critical decisions of the Government on a range of issues such as Administrative Reforms, Right to Information, Right to Employment, Food Security, Energy Security, Information Technology and Telecommunication, setting up of UIDAI, Aadhar etc. In the seventies and eighties, he was instrumental in setting up the Regional Rural Banks (1975) and the EXIM Bank of India as well as NABARD – National Bank for Agriculture and Rural Development(1981-82). He worked tirelessly for expansion in number of the branches in rural areas, as also overseas branches of nationalized banks, particularly in the Gulf region which legally enhanced remittances substantially. Shri Mukherjee also authored the modified formula for resource sharing between the Centre and the States in 1991 for the Five Year Plans which came to be known as the Gadgil - Mukherjee formula.

7. Shri Mukherjee has extensive diplomatic experience and has served on the Board of Governors of the International Monetary Fund, World Bank, Asian Development Bank and African Development Bank. He has led the Indian delegations to the Commonwealth Finance Ministers' Conferences in 1982, 1983 and 1984; the United Nations General Assembly – 1994, 1995, 2005,, 2006, 2007 and 2008; the Summit Meeting of the Commonwealth Heads of Government at Auckland in 1995, the Non-Aligned Foreign Minister's Conference at Cartagena in 1995 and the Meeting to mark the 40th anniversary of the Afro—Asian Conference in Bandung in 1995.

8. A powerful orator and scholar, Shri Mukherjee's intellectual and political prowess as well as remarkable knowledge of international relations, financial affairs and parliamentary process are widely admired. He has been acclaimed for his role as a consensus builder on difficult national issues with his ability to forge unanimity amongst the diverse political parties that form part of India's vibrant multi-party democracy.

Contd.....

9. श्री मुखर्जी एक गहन अध्येता हैं और उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था और राष्ट्र निर्माण पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। वे खाली समय में पढ़ने, बागवानी करने और संगीत सुनने का शौक रखते हैं। उनकी रुचियां सादा किस्म की हैं, और वे कला एवं संस्कृति के एक निष्ठावान संरक्षक हैं। उन्हें दिए जाने वाले कई पुरस्कारों और सम्मानों में 2008 में भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म विभूषण, 1997 में सर्वश्रेष्ठ सांसद पुरस्कार और 2011 में सर्वश्रेष्ठ प्रशासक पुरस्कार शामिल हैं।

10. श्री प्रणब मुखर्जी को ग्यारह विदेशी विश्व विद्यालयों और सात भारतीय विश्वविद्यालयों से डॉक्टरेट की मानद उपाधियां प्रदान की गई हैं। उन्हें 2018 में कल्याणी विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2018 में आईआईईएसटी, शिबपुर द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2018 में चटगांव विश्व विद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2017 में गोवा विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2017 में जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2016 में काठमांडू विश्वविद्यालय, नेपाल द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2015 में रूसी राजनयिक अकादमी द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2015 में बेलारूस स्टेट विश्वविद्यालय द्वारा प्रोफेसर की मानद उपाधि; 2015 में हिब्रू विश्व विद्यालय, येरुशलम, इजराइल द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2015 में जॉर्डन विश्वविद्यालय द्वारा राजनीति विज्ञान में डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2015 में अल-कुदस विश्वविद्यालय, फिलिस्तीन द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2014 में कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट (लॉ) की मानद उपाधि; 2013 में इस्ताम्बुल विश्वविद्यालय द्वारा राजनीति विज्ञान में डॉक्टरेट की मानद उपाधि; 2013 में ढाका विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ लॉज की मानद उपाधि; 2013 में मॉरीशस विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ सिविल लॉ की मानद उपाधि; 2012 में विश्वेश्वरैया प्रौद्योगिकीय विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद उपाधि; 2012 में असम विश्वविद्यालय द्वारा मानद उपाधि; वर्ष 2011 में वोल्वरहैम्पटन विश्वविद्यालय, यूके द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि तथा 1984 में जबलपुर विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की गई। उन्हें 1984 में न्यूयॉर्क से प्रकाशित "यूरो मनी" जर्नल के एक सर्वेक्षण में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पांच वित्त मंत्रियों में से एक का दर्जा दिया गया और 2010 में विश्व बैंक और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के जर्नल "एमर्जिंग मार्केट्स" द्वारा एशिया का "फाइनेंस मिनिस्टर ऑफ द ईयर" घोषित किया गया था।



9. A prolific reader, Shri Mukherjee has authored several books on the Indian Economy and Nation Building. He enjoys reading, gardening and music in his spare time. Simple in his tastes, he is a dedicated patron of the arts and culture. The many awards and honours conferred on him include India's second highest civilian award, Padma Vibhushan in 2008, the Best Parliamentarian Award in 1997 and Best Administrator in India Award in 2011.

10. Shri Pranab Mukherjee is a recipient of Honorary Doctorate/Honoris Causa/Honorary Degrees from eleven Foreign Universities and from seven Indian Universities. He received Doctor of Letters Honoris Causa by University of Kalyani in 2018; Doctor of Letters Honoris Causa by IIST, Shibpur in 2018; Honorary Doctor of Letters by University of Chittagong, Bangladesh in 2018; Honorary Doctorate conferred by Goa University in the year 2017; Doctor of Letters Honoris Causa by Jadavpur University in 2017; Honorary Doctorate conferred by Kathmandu University, Nepal in 2016; Honorary Doctorate conferred by the Russian Diplomatic Academy in 2015; Professor Honoris Causa conferred by the Belarus State University in 2015; Doctor Philosophiae Honoris Causa conferred by Hebrew University of Jerusalem, Israel in 2015; Honorary Doctorate in Political Science conferred by the University of Jordan in 2015; Honorary Doctorate conferred by Al-Quds University, Palestine in 2015; Doctor of Letters (Law) conferred by the University of Calcutta in 2014; Doctorate Honoris Causa in Political Science by University of Istanbul in 2013, Doctor of Laws Honoris Causa by the University of Dhaka in 2013; Doctor of Civil Law Honoris Causa by University of Mauritius in 2013; Doctor of Science Honoris Causa by Visvesvaraya Technological University in 2012; Honoris Causa by Assam University in 2012; Doctor of Letters Honoris Causa by University of Wolverhampton, UK in the year 2011 and Doctor of Letters from University of Jabalpur in the year 1984. He was rated one of the best five Finance Ministers of the world in 1984 according to a survey conducted by 'Euro Money' Journal published from New York and was declared 'Finance Minister of the year' for Asia in 2010 by 'Emerging Markets', the journal of record for the World Bank and the International Monetary Fund (IMF).